गद्य 6 वह चीनी भाई

— श्रीमति महादेवी वर्मा

लेखक परिचय

(हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा सिद्धहस्त गद्य लेखिका भी हैं। उनकी गद्यलेखन-शैली इतनी सरस और प्राणवान है कि वह पाठक के मन पर अमिट छाप छोड़ जाती है। विशेषकर उनके शब्द चित्र अत्यंत ही सुंदर एवं मर्मस्पर्शी है। गीतों की मर्यादित सीमा में उनकी जो भावनाएँ पूर्ण अभिव्यक्ति नहीं पा सकी थीं उन्हें गद्य का सुगम एवं सुविस्तृत क्षेत्र मिला। जीवन की गहराई में उतरकर यथार्थ का हृदयस्पर्शी चित्रण करने में महादेवीजी ने अद्‌भुत कुशलता दिखायी है। 'गद्य ही कवियों की प्रतिभा की कसौटी है - इस उक्ति को उन्होंने चरितार्थ किया है। उनकी 'स्मृति की देखाएँ' और 'अतीत के चलचित्र' आदि पुस्तकों में वर्णन की सूक्ष्मता और शैलीकी सरसता देखते ही बनती है।

'वह चीनी भाई' एक मार्मिक शब्द-चित्र है। चीन भारत का पड़ोसी है और वहाँ के निवासी हमारी तरह ही एशियायी हैं। लेकिन किसी समय लेखिका ने अवज्ञ के साथ एक चीनी फेरीवाले को 'विदेशी' कहा था जिसका उत्तर उसने दिया - "हम क्या विदेशी? हम तो चाईना से आता है"। चीनी भाई के इस सहज-सरल उत्तर से लेखिका के मन में जो कचोट पैदा हुई, उसी ने आगे चलकर इस संस्मरणात्मक शब्द चित्र करूप लिया।

मुझे चीनियों में पहचानकर स्मरण रखने योग्य विभिन्नता कम मिलती है। कुछ समतल मुख एक ही साँचे में ढ़ले-से जान पड़ते हैं और उनकी एकरसता दूर करनेवाली, वस्त्र पर पड़ी हुई सिकुडन-जैसी नाक की गठन में भी विशेष अंतर नहीं दिखाई देता। कुछ तिरछी, अधखुली और विरल भूरी बरुनियोंवाली आँखों की तरल रेकाकृति देखकर भ्रांति होती है कि वे सब एक नाप के अनुसार किसी तेज़ धार से चीरकर बनायी गयी है। स्वाभाविक पीतावर्ण, धूप के चरण-चिन्हों पर पड़े हुए धूल के आवरण के कारण कुछ ललछौहे सूखे पत्ते की समानता पर लेता है। आकार-प्रकार , वेष-भूषा सब मिलकर इन दूर-देशियों को यंत्रचालित पुतलों की भूमिका दे देते हैं, इसीसे अनेक बार देखने पर भी एक फेरीवाले चीनी को दूसरे से भिन्न करके पहचानना कठिन है।

पर आज उन मुखों की एकरूप स्मष्टि में मुझे आर्द्र नीलिमामयी आँखों के साथ एक मुख स्मरण आता है, जिसकी मौन भंगिमा कहती है – "हम कार्बन की कापियाँ नहीं हैं। हमारी भी एक कथा है। यदि जीवन की वर्णमाला के संबंध में तुम्हारी आँखें निरक्षर नहीं, तो तुम पढ़कर देखो न।"

कई वर्ष पहले की बात है, मैं तांगे से उतरकर भीतर आ रही थी कि भूरे कपड़े का गट्ठर बायें कंधे के सहारे पीठ पर लटकाये हुए और दाहिने हाथ में लोहे का गज़ घुमाता हुआ चीनी फेरीवाला फाटक से बाहर निकले आ रहा था। संभवतः मेरे घर को बंद पाकर वह लाटा जा रहा था। "कुछ लेगा मेम साहब!" — दुर्भाग्य का मारा चीनी! उसे क्या पता कि यह संबोधन मेरे मन में रोष की सबसे तुंग तरंग उठा देता है। मइया, माता जीजी, दिदिया, बिटिया आदि न जाने कितने संबोधनों से मेरा परिचय है और सब मुझे प्रिय है, पर यह विजातीय संबोधन मानों सारा परिचय छीनकर मुझे गाउन में खड़ा कर देता है। इस संबोधन के उपरांत मेरे पास से निराशा होकर न लौटना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

मैंने अवज्ञा से उत्तर दिया—मैं फ़ारन (विदेशी) नहीं खरीदती।

"हम क्या फ़ारन है? हम तो चाइना से आता है।" कहनेवाले के कण्ठ में सरल विस्मय के साथ उपेक्षा की चोट से उत्पन्न क्षोभ भी था। इस बार रुककर उत्तर देनेवाले को ठीक से देखने की इच्छा हुई। धूल से मटमैले सफ़ेद किरमिच के जूते में छोटे पैर छिपाये, पतलून और पाजामें का सम्मिश्रित परिणाम-जैसा पाजामा और कुरता तथा कोट की एकता के आधार पर सिला कोट पहने, उधड़े हुए किनारों से पुरानेपन की घोषणा करते हुए हैट से आधा माथा ढके, दाढ़ी-मूँछविहीन, दुबली-नाटी जो मूर्ती खड़ी थी, वह तो शाश्वत चीनी है। उसे सबसे अलग करके देखने का प्रश्न जीवन में पहली बार उठा।

मेरी उपेक्षा से उस विदेशीय को चोट पहुँची, यह सोचकर मैंने अपनी 'नहीं' को और अधिक कोमल बनाने का प्रयास किया, 'मुझे कुछ नहीं चाहिए भाई।" चीनी भी विचित्र निकला,"हमको भय बोला है, तुम जरूल लेगा, जरूल लेगा—हाँ?" "होम करते हाथ जला" वाली कहावत हो गयी–विवश कहना पड़ा, 'देखूँ तुम्हारे पास है क्या।" चीनी बरामदे में कपड़े का गट्ठा उतारता हुआ कह चला, "भोत अच्छा सिल्क आता है सिस्तर। चाइना सिल्क क्रेप...." बहुत कहने-सुनने के उपरांत दो मेज़पोश खरीदना आवश्यक हो गया। सोचा—चलो छुट्टी हुई, इतनी कम बिक्री होने के कारण चीनी अब कभी इस ओर आने की भूल न करेगा।

पर कोई पंद्रह दिन बाद वह बरामदे में अपनी गठरी पर बैठकर गज को फ़र्श पर बजा-बजाकर गुनगुनाता हुआ मिला। मैंने उसे कुछ बोलने का अवसर न देकर, व्यस्त भाव से कहा

—अब तो मैं कुछ न लूँगी। समझे? चीनी खड़ा होकर जेब से कुछ निकालता हुआ प्रफुल्ल मुद्रा से बोला—सिस्तर आपका वास्ते हैं कि लाता है, भोत बेस्त सब सेल हो गया। हम इसको पाकेट में छिपाके लाता है।

देखा–कुछ रूमाल थे। ऊदी रंग के डोरे भरे हुए, किनारों का हर घुमाव और कानों में उसी रंगसे बने नन्हें फूलों की प्रत्येक पंखुड़ी चीनी-नारी की कोमल उँगलियों की कलात्मकता ही नहीं व्यक्त कर रही थी, जीवन के अभाव की करुण ही कह रही थी। मेरे मुख के निषेधात्मक भाव को लक्ष्य कर अपनी नीली रेखाकृत आँखों को जल्दी-जल्दी बंद करते और खोलते हुए वह एक साँस में 'सिस्तर का वास्ते लाता है, दोहराने लगा।

मन में सोचा, अच्छा भाई मिला है। बचपन में मुझे लोग चीनी कहकर चिढ़ाया करते थे। संदेह होने लगा, उस चिढ़ाने में कोई तत्व भी रहा होगा। अन्यथ आज एक सचमुच का चीनी, सारे इलाहाबाद को छोड़कर मुझसे बहन का संबंध क्यों जोड़ने आता। पर उस दिन से चीनी को मेरे यहा जब-तब आने का विशेष अधिकार प्राप्त हो गया है। चीन का साधारण श्रेणी का व्यक्ति भी कला के संबंध में विशेष अभिरुचि रखता है, इसका पता भी उसी चीनी की परिष्कृत रुचि में मिला।

नीली दीवार पर किस रंग के चित्र सुंदर जान पड़ते हैं, हरे कुशन पर किस प्रकार के पक्षी अच्छे लगते हैं, सफ़ेद पर्दे के कोने में किस बनावट के फूल-पत्ते खिलेंगे आदि के विषय में चीनी उतनी ही जानकारी रखता था, जितनी किसी अच्छे कलाकार में मिलेगी। रंग से उसका अतिपरिचय यह विश्वास उत्पन्न कर देता था कि वह आँखों पर पट्टी बाँध देने पर भी केवल स्पर्श से रंग पहचान लेगा। चीन के वस्त्र, चीन के चित्र आदि की रंगमयता देखकर भ्रम होने लगता है कि वहाँ की मिट्टी का हर कण भी इन्हीं रंगों से रंगा हुआ न हो। चीन देखने की इच्छा प्रकट करते ही 'सिस्तर' का वास्ते हम चलेगा"। कहते-कहते चीनी की आँखों की नीली रेखा प्रसन्नता से उजली हो उठती थी।

अपनी कथा सुनाने के लिए वह विशेष उत्सुक रहा करता था। पर कहने सुननेवाले के बीच की खाई बहुत गहरी थी। उसे चीनी और बर्मी भाषाएँ आती थीं जिनके संबंध में अपनी सारी विद्या-बुद्धि के साथ मैं 'आँखों के अंधे नाम नैनमुख' की कहावत चरितार्थ करती थी। अंग्रेज़ी की क्रियाहीन संज्ञाओं और हिंदुस्तानी की संज्ञाहीन क्रियाओं के सम्मिश्रण के जो विचित्र भाषा बनती थी, उसमें कथा का सारा मर्म बँध नहीं पाता था। पर जो कथाएँ हृदय का बाँध तोड़कर दूसरों को अपना परिचय देने के लिए बह निकली है, प्रायः करुण होती है और करुणा की भाषा शब्दहीन रहकर भी बोलने में समर्थ है। चीनी फेरीवाले की कथा भी इसका अपवाद नहीं।

जब उनके माता-पिता ने माडले (बर्मा) आकर चाय की छोटी दूकान खोली, तब उसका जन्म नहीं हुआ था। उसे जन्म देकर और सात वर्ष की बहन से संरक्षण छोड़कर जो परलोक सिधारी उस अनदेखी माँ के प्रति चीनी की श्रद्धा अटूट थी।

संभवतः माँ ही ऐसी प्राणी है जिसे कभी न देख पाने पर भी मनुष्य ऐसे स्मरण करता है, जैसे उसके संबंध में जानना बाकी नहीं। यह स्वाभाविक भी है।

मनुष्य को संसार में बाँधनेवाला विधाता माँ ही है, इसीसे उसे न मानकर संसार को न मानना सहज है। पर संसार को मानकर उसे न मानना असंभव ही रहता है।

पिता ने जब दूसरी बर्मी चीनी स्त्री को गृहिणी-पद पर अभिषिक्त किया तब उन मातृहीनों की यातना की कठोर कहानी आरंभ हुई। दुर्भाग्य इतने से ही संतुष्ट नहीं हो सका, क्योंकि उसके पाँचवें वर्ष में पैर रखते-रखते एक दुर्घटना में पिता ने भी प्राण खोये।

अब अबोध बालकों के समान उसने सहज ही अपनी परिस्थितियों से समझौता कर लिया, पर बहन और विमाता में किसी प्रस्ताव को लेकर जो वैमनस्य बढ़ रहा था, वह इस समझौती को उत्त्रोत्त्र

विषाक्त बनाने लगा। किशोरी बालिका की अवज्ञा का बदला उसीको नहीं, उसके अबोध भाई को कष्ट देकर भी चुकाया जाता था। अनेक बार उसने ठिठुरती हुई बहन की कंपित अंगुलियों में अपने हाथ रख उसके मलिनवस्त्रों में अपना आँसुओं से धुला मुख किया और उसीकी छोटी सी गोद में सिमटकर भूख भुलायी थी। कितनी ही बार सबेरे आँख मूँदकर बंद द्वार के बाहर दीवार से टिकी हुई बहन के ओस-से गीले बालों में अपनी ठिठुरती हुई उँगलियों को गर्म करने का व्यर्थ प्रयास करते हुए उसने पिता के पास जाने का रास्ता पूछा था। उत्तर में बहन के फीके गाल पर चुपचाप ढुलक आनेवाले आँसू की बड़ी बूँद देखकर वह घबराकर बोल उठा था-–"उसे कहवा नहीं चाहिए, वह तो पिता को देखना भर चाहता है।"

कई बार पड़ोसियों के यहाँ रकावियाँ धोकर और काम के बदले भारत माँगकर बहन ने भाई को खिलाया था। व्यथा की कौन सी अंतिम मात्रा ने बहन के नन्हे हृदय का बाँध तोड़ जाला, इसे अबोध बालक क्या जाने। पर एक रात उसने बिछौने पर लेटकर बहन की प्रतीक्षा करते-करते आधी आँख खोली और विमाता को कुशल बाजीगर की तरह मैली-कुचैली बहनका कायापलट करते देखा। उसके सूखे ओंठों पर विमाता की मोटी उँगली ने दौड़-दौड़कर लाली फेरी, उसके फीके गालों पर चौड़ी हथेली ने घूम-घूमकर सफ़ेद गुलाबी रंग भरा, उसके रूखेवालों को कठोर हाथों ने घेरे-घेरकर सँवारा और तब नये रंगीन वस्त्रों में सजी हुई उस मूर्ती को एक

प्रकार से ठेलती हुई विमाता रात के अंधकार में बाहर अंतर्निहित हो गई।

बालक का विस्मय भय में बदल गया और भय ने रोने में शरण पाई। कब वह रोते-रोते सो गया इसका पता नहीं, पर जब वह किसीके स्पर्श से जागा तो बहन उस गठरी बने हुए भाई के मस्तक पर मुख रखकर सिसकियाँ रोक रही थी। उस दिनउसे अच्छा भोजन , मिला दूसरे दिन कपड़े, तीसरे दिन खिलौने - पर बहन के दिनों- दिन विवर्णहोनेवाले ओंठों पर अधिक गहरे रंग की आवश्यकता पड़ने लगी, उसके उत्तरोतर फीके पड़नेवाले गालों पर देर तक पाउडर मला जाने लगा।

बहन के छीजते शरीर और घटती शक्ति का अनुभव बालक करता था, पर वह किससे कहे, क्या करे, यह उसकी समझ के बाहर की बात थी। बार-बार सोचता था, पिता का पता मिल जाता तो सब ठीक हो जाता। उसके स्मृतिपट पर माँ कोई रेखा नहीं, परंतु पिता को जो अस्पष्ट चित्र अंकित था उससे उनके स्नेहशील होने में संदेह नहीं रह जाता।प्रतिदिन निश्चित करता कि दूकान में आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति से पिता का पता पूछेगा और एक दिन चुपचाप उनके पास पहुँचेगा और उसी तरह चुपचाप उन्हें घर लाकर खड़ा कर देगा—तब यह विमाता कितनी डर जाएगी और बहन कितनी प्रसन्न होगी।

चाय की दूकान का मालिक अब दूसरा था, परंतु पुरने मालिक के पुत्र के साथ उसके व्यवहार में सहृदयता कम नहीं रही, इसीसे बालक एक कोने में सिकुडकर खड़ा हो गया और आनेवालों से हकला हकलाकर पिता का पता पूछने लगा। कुछ ने उसे आश्चर्य से देखा, कुछ मुस्कुरा दिय, पर दो-एक ने दूकानदार से कुछ ऐसी बातकही, जिससे वह बालक को हाथ पकड़कर बाहर ही छोड़ आया, इस भूल की पुनरावृत्ति होने पर विमाता से दण्ड दिलाने की धमकी भी दे गया। इस प्रकार उसकी खोज का अंत हो गया।

बहिन का संध्या होने ही कायापलट, फिर भी उसका आधी रात बीत जाने पर भारी पैरों से लौटना, विशाल शरीरवाली विमाता का जंगली बिल्ली की तरह हल्के पैरों से बिछौने से उछलकर उतर आना, बहिन के शिथिल हाथों से बटुए का छिन जाना और उसका भाई के मस्तक पर मुख रकखकर स्तब्ध भाव से पड़े रहना आदि क्रम ज्यों-के-त्यों चलते रहे।

पर एक दिन बहिन लौटी ही नहीं। सबेरे विमाता को कुछ चिंतित भाव से उसे खोजते देख बालक सहसा अज्ञात भय से सिहर उठा। बहिन—उसकी एकमात्र आधार बहिन! पिता का पता न पा सका और अब बहिन भी खो गई। जैसा था वैसा ही बहिन को खोजने के लिए गली-गली में मारा-मारा फिरने लगा। रात में वह जिस रूप में परिवर्तित हो जाती, उसमें दिन को उसे पहिचान सकना कठिन था, इससे वह जिसे अच्छे कपड़े पहने हुए जाती देखता, उसीके

पास पहुँचने के लिए सड़क के एक ओर वे दूसरी ओर दोड़ पड़ता। कभी किसीसे टकराकर गिरते-गिरते बचता, कभी किसीसे गाली खाता, कभी कोई दयासे प्रश्न कर बैठता –'क्या इतना ज़रा-सा लड़का भी पागल हो गया है?"

इसी प्रकार भटकता हुआ वह गिरहकटों के गिरोह के हाथ लाग और तब उसकी शिक्षा आरंभ हुई। जैसे लोग कुत्ते को दो पैरों से बैठना, गर्दन ऊँचे कर खड़ा होना, मुँह पर पंजे रखकर सलाम करना आदिकरतब सिखाते हैं उसी प्रकार वे सब उसे तंबाकू के धुएँ और दुर्गंध मांस से भरे और फटे चिथड़े, टूटे बरतन और मैले शरीरों से बसे हुए कमरे में बंद कर कुछ विशेष संकेतों और हँसने-रोने के अभिनय में पारंगत बनाने लगे।

कुत्ते के पिल्ले के समान ही वह घुटनों के बल खड़ा रहता और हँसने-रोने की विविध मुद्राओं का अभ्यास करता। हँसी का स्रोत इस प्रकार सूख चुका था कि अभिनय में भी वह बार-बार भूल करता और मारखाता। पर क्रन्दन उसके भीतर इतना अधिक उमड़ा रहता था। कि जा मुँह के बनाते ही दोनों आँखों से दो गोल-गोल बूँदे नाक के दोनों ओर निकल आतीं और पतली समानान्तर रेखा बनाती और मुँह दोनों सिरों को छूती हुई ठुड्डी के नीचे तक चली जातीं। इसे अपनी दुर्लभ शिक्षा का फल समझकर रोओं से काले उदर पर पीला-सा रंग बाँधनेवाला उसका शिक्षक प्रसन्नता से उठकर उसे एक लात जमाकर पुरस्कार देता।

वह दल बर्मी, चीनी, स्यामी आदि का सम्मिश्रण था। इसीसे चोरों की बरात में अपनी-अपनी होशियारी के सिद्धांत का पालन बड़ी सतर्कता से हुआ करता। जो उसपर कृपा रखते थे, उनके विरोधियों का स्नेहपात्र होकर पिटना भी उसका परम कर्तव्य हो जाता था। किसीकी कोई वस्तु खोते ही उसपर संदेह की ऐसी दृष्टि आरंभ होती कि बिना चुराये ही वअ चोर के समान काँपने लगता और तब उस 'चोर के घर छिछोर' की जो मरम्मत होती थी, उसका स्मरण करके चीनी की आँखें आज भी व्यथा और अपमान से धक-धक जलने लगती थीं।

सबके खाने के पात्र में बचा उच्छिष्ट एक तामचीनी के टेढ़े बरतन में सिबार से जगह-जगहजले हुए कागज़ से ढक्कर रख दिया जाता था, जिसे वह हरी आँखोंवाली बिल्ली के साथ खाता था।

बहुत तान गए तक उसके नरक के साथी एक-एक कर आते रहते और अंगीठी के पास सिकुडकर लेटे हुए बालक को ठुकराते हुए निकल जाते। उनके पैरों की आहट को पढ़ने का उसे अच्छा अभ्यास हो चला था। जो हलके पैरों को जल्दी-जल्दी रखता आता है, उसे बहुत कुछ मिल गया है। जो शिथिल पैरों को घसीटता हुआ लौटता, वह खाली हाथ है। जो दीवार को टटोलता हुआ, लड़खड़ाते पैरों से बढ़ता वह शराब में सब खोकर बेसुध आया है। जो देहली

से ठोकर खाकर धम-धम पैर रखता हुआ घुसता है, उसने किसीसे झगड़ा मोल ले लिया है, आदि का ज्ञान उसे अनजान में ही प्राप्त हो गया था।

यदि दीक्षांत संस्कार के उपरांत विद्या के उपयोग का श्रीगणेश होते ही उसकी भेंट पिता के परिचित एक चीनी व्यापारी से नहीं हो जाती, तो इस साधना से प्राप्त विद्वता का अंत क्या होता, यह बताना कठिन है। पर संयोग ने उसके जीवन की दिशा को इस प्रकार बदल दिया कि वह कपड़े की दूकान पर व्यापारी की विद्या सीखने लगा।

प्रशंसा का पुल बाँधते-बाँधते वर्षों पुराना कपड़ा सबसे पहले उठा लाना, गज से इस तरह नापना कि जो बराबर भी आगे न बढ़े, चाहे अंगुल-भर पीछे रह जाए। रुपये से लेकर पाई तक को खूब देख-भालकर लेना और लौटाते समय पुराने, खोटे पैसे विशेष रूप से खनका-खनकाकर दे डालना आदि का ज्ञान कम रहस्यमय नहीं था। पर मालिक के साथ भोजन मिलने के कारण बिल्ली के उच्छिष्ट सहभोज की आवश्यकता नहीं रही और दूकान में सोने की व्यवस्था होने से अंगीठी के पास ठोकरों से पुरस्कृत होने की विशेषता जाती रही। चीनी छोटी अवस्था में ही समझ गया था कि धन-संचय से संबंध रखनेवाली सभी विद्याएँ एक-सी हैं, पर मनुष्य किसी का प्रयोग प्रतिष्ठापूर्वक कर सकता है और किसी का छिपाकर।

कुछ अधिक समझदार होने पर उसने अपनी अभागी बहिन को ढूँढ़ने का बहुत प्रयत्न किया, पर उसका पता न पा सका। ऐसी बालिकाओं का जीवन खतरे से खाली नहीं रहता। कभी वे मूल्य देकर खरीदी जाती है और कभी बिना मूल्य के गायब कर दी जाती है। कभी वे निराश होकर आतमहत्या कर लेती है और कभी शराबी ही नशे में उन्हें जीवन से मुकत कर देते हैं। उस रहस्य की सूत्रधारिणी विमाता भी संभवतः पुनर्विवाह कर किसी और को सुखी बनाने के लिए कहीं दूर चली गयी थी। इस प्रकार उस दिशा में खोज का मार्ग ही बंद हो गया।

इसी बीच में मालिक के काम से चीनी रंगून आया, फिर दो वर्ष कलकत्ता में रहा और तब अन्य साथियों के साथ उसे इस ओर आने का आदेश मिला। यहाँ शहर में एक चीनी जूतेवाले के घर ठहरा है और सबेरे आठ से बारह और दो से छः बजे तक फेरी लगाकर कपड़े बेचता रहता है।

चीनी की दो इच्छाएँ हैं, ईमानदार बनने की और बहिन को ढूँढ लेने की – जिनमें से एक को पूर्ति तो स्वयं उसी के हाथ में हे और दूसरी के लिए वह प्रतिदिन भगवान बुद्ध से प्रार्थना करता है।

बीच-बीच में वह महीनों के लिए बाहर चला जाता था, पर लौटते ही "सिस्तर का वास्ते

ई लाता है" कहता हुआ कुछ लेकर उपस्थित हो जाता। इस प्रकार देखते-देखते मैं अपनी अभ्यस्त हो चुकी थी जब एक दिन वह 'सिस्तर का वास्ते' कहकर और शब्दों की खोज़ करने लगा तब मैं उसकी कठिनाई न समझकर हँस पड़ी। धीरे-धीरे पता चला– बुलावा आया है, यह लड़ने के लिए चाहना जाएगा। इतनी जल्दी कपड़े कहाँ बेचे और न बेचने पर मालिक को हानि पहुँचाकर बेईमान कैसे बने? यदि मैं उसे आवश्यक रुपया देकर सब कपड़े ले लूँ, तो वह मालिक का हिसाब चुकाकर कर तुरंत देश की ओर चल दे।

किसी दिन पिता का पता पूछे जाने पर वह हकलाया था — आज भी संकोच से हकला रहा था। आज भी संकोच से हकला रहा था। मैंने सोचने का अवकाश पाने के लिए प्रश्न किया – "तुम्हारे तो कोई है ही नहीं, फिर बुलावा किसने भेजा?" चीनी की आँखें विस्मय से भरकर पूरी खुल गयीं– "हम कब बोला हमारा चाइना नहीं है? हम कब ऐसा बोला सिस्तर?" मुझे स्वयं अपने प्रश्न पर लज्जा आयी, उसका इतना बड़ा चीन रहते वह अकेला कैसा होगा।

मेरे पास रुपया ही कठिन है, अधिक रुपये की चर्चा ही क्या। पर कुछ अपने पास खोज-ढँढकर और कुछ दूसरों से उधार लेकर, मैंने चीनी के जाने का प्रबंध किया। मुझे अंतिम अभिवादन कर जब वह चंचल पैरों से जाने लगा, तब मैंने पुकारकर कहा—यह गज तो लेती जाओ। चीनी सहज स्मित के साथ घूमकर "सिस्तर का वास्ते" ही कह सका। शेष शब्द उसके हकलाने में खो गये और आज कई वर्ष हो चुके हैं–चीनी को फिर देखने की संभावना नहीं, उसकी बहन से मेरा कोई परिचय नहीं, पर न जाने क्यों वे दोनों भाई-बहन मेरे स्मृतिपट से हट ते ही नहीं।

चीनी की गठरी में से कई थान मैं अपने ग्रामीण बालकों के कुर्ते बना-बनाकर खर्च कर चुकी हूँ, परंतु अब भी तीन थान मेरी अलमारी में रखें है लोहे का गज दीवार के कोने में खड़ा है। एक बार जब इन थानों को देखकर एक खादी-भक्त बहिन ने आक्षेप किया था–जो लोग बाहर विशुद्ध खद्दारधारी होते हैं, वे भी विदेशी रेशम के थान खरीदकर रखते हैं, इसी से तो देश की उन्नति नहीं होती-तब मैं बड़े कष्ट से हँसी रोक सकी।

वह जन्म का दुखियारा मातृ-पितृहीन और बहिन से बिछुडा हुआ चीनी भाई अपने समस्त स्नेह के एकमात्र आधार चीन में पहुँचने का आतमतोष पा गया है, इसका कोई प्रमाण नहीं–पर मेरा मन यही कहता है।

I. कठिन शब्दार्थ

बरुनियाँ - पलकों में किनारे के बाल; ललछौहा - हल्की लालिमा; दूरदेशी - देर देश का रहनेवाला; पुतला - लकड़ी या धातु आदि की बनी निर्जीव प्रतिमा; आर्द्र - भीगा; गज - लोहे आदि की लंबी छड़ जिससे कपड़े नापने का काम लिया जाता है। तीन फुट; फ़ेरीवाला - गलि-गलि घूमकर चीज़ें बेचनेवाला; तुंगा - ऊँचा; किरमिच - एक तरह का चिकना और मोटा कपड़ा जिससे टेनिस के जूते आदि बनाते हैं। कुशन - मोटा गद्दा; उजली हो उठता - उज्जवल हो जाना; आँखों के अंधे - नाम नैनमुख - नाम के विपरीत स्वभाव या रूप का होना; अनदेखी - जिसे देखा नहीं हो;अभिषिक्त करना - किसी ऊँचे पद पर बैठाना; विमाता - सौतेली माँ; विषाक्त - जहरीला; रुकाबी - तश्तरी, प्लेट; बाजीगर - जादूगर; कायापलट - रूप परिवर्तन; अन्तर्हित - गायब, अदृश्य; हकलाना - रुक-रुककर बोलना;पुरावृत्ति - दोहराना; बटुआ - छोटी थैली; गिरहकटा - पाकेटमार; गिरोह - दल, झुंड; करतब - कौशल, हुनर; पारंगत - जिसने किसी विद्य का पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया हो;पिल्ला - कुत्ते का बच्चा; सिरा - छोर; छिछोर - कमीना, नीच; उच्छिष्ट - जूठा; तामचीनी - लोहे का कलईदार पात्र; दहेली - दरवाज़े की निचली चौखट; सहभोज - साथ भोजन करना; सूत्रधारिणी - व्यवस्था करनेवाली;

II. निम्न मुहावरों/लोकोक्तयों का वाक्यों में प्रयोग कीजिएः-

साँचे में ढलना, होम करते हाथ जलना, आँखों के अंधे नाम नैन मुख, परलोक सिधारना, वैमनस्य बढ़ाना, कायापलट करना, अन्तनिर्हित हो जाना, सिहर उठना, अवांछनीय

III. एक या दो वाकयों में उत्तर दीजिएः-

1. वह चीनी भाई शब्द चित्र की लेखिका कौन है?
2. लेखिका को चीनी फेरिवालों को भाई करके पहचानने में क्यों कठिनाई हो रही थी?
3. चीनीवाले के मेमसाहब के संबोधन से लेखिका क्यों गुस्सा होती थी?
4. 'हवन करते हाथ जलना' की स्थिति लेखिका को क्यों मिली?
5. बचपन में लेखिका को लोग क्या कहकर चिढ़ाया करते थे?
6. अनदेखी माँ के प्रति चीनी की श्रद्धा देखकर लेखिका क्या सोचा करती थी?

IV. विस्तृत उत्तर लिखिए:-

1. लेखिका ने चीनियों के रूप का वर्णन कैसा किया?

2. अंग्रेज़ी शब्द के संबोधन सुनकर लेखिका के मन में कैसा होता था?

3. चीनी फेरीवाला की करुण कथा का वर्णन कीजिए?

4. गिरहकटों के गिरोह में क्या-क्या होता था?

5. लेखिका के लिए उस चीनी फेरीवाले को भूलना क्यों असंभव सा रहा?

V. संदर्भ सहित व्याखया कीजिए:-

1. हम कार्बन की कापियाँ नहीं है। हमारी भी एक कथा है।

2. पर वह विजातीय संबोधन मानो सारा परिचय छीनकर मुझे गाउन में खड़ा कर देता है।

3. होम करते हाथ जला वाली कहावत हो गई।

4. मनुष्य को संसार में बाँधनेवाला विधाता माँ ही है, इसी से उसे न मानकर संसार को न मानना सहज है।